सम-सामयिक सलाह

माह- अक्टूबर 2014

- ❖ आम, लीची के बागों में बोर्डोपेस्ट लगावें।
- ❖ आम एवं आँवला में क्रमशः हार्मोन्स एवं बोरेक्स का छिड़काव करें।
- ❖ गुलाब की कटाई–छटाई कर बार्डो पेस्ट लगावें।
- ❖ तिवड़ा की उन्नत प्रजातियाँ जैसे– प्रतीक, रतन, महातिवड़ा का उपयोग करें।
- ❖ मटर की उन्नत प्रजातियाँ जैसे– अंबिका, शुभ्रा, रचना का उपयोग करें।
- ❖ गन्ने की शीतकालीन फसल की बुवाई करें।
- ❖ भूरा माहो के अधिक प्रकोप की अवस्था में इमीडाक्लाकप्रिड 17.8 एस. एल. का 125 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें अथवा कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलसनशील चूर्ण का छिड़काव करें। छिड़काव पौधे के निचले हिस्से में केन्द्रित करें।
- ❖ पर्णच्छद विगलन (शीथ रॉट) नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनाजोल का (1 मि.ली./ली.) छिड़काव करें

माह- नवम्बर 2014

- ❖ खरीफ फसल की कटाई के पहले खेतों से जल निकासी पूर्णरूप से करें व निष्कासित जल को रबी फसल या सब्जी की फसल में उपयोग हेतु नालियों के माध्यम से प्रक्षेत्र जलाशय (डबरी) से संग्रहित करें।
- ❖ आम में सिंचाई रोक दें एवं कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- ❖ शीतकालीन मौसमी पुष्पों में निंदाई, गुड़ाई, सिंचाई एवं पोषण प्रबंधन करें।
- ❖ रबी दलहनी एवं तिलहनी फसलों की बुवाई इस माह में पुर्ण कर लेवें।
- ❖ गेहूं के बीजों को कार्बाक्सिन + थायरम (2 ग्राम /किलो बीज) की दर से उपचारित करें।
- ❖ धान कटाई के उपरान्त संचित नमी के उपयोग हेतु जीरो सीड ड्रिल द्वारा फसलों की बुवाई करें।
- ❖ दलहनी फसलों में उकठा एक प्रमुख रोग है। इसके नियंत्रण हेतु निरोधक प्रजातियों का उपयोग करें।
- ❖ चना, मसूर, मटर, सरसों आदि फसलों में नींदा नियंत्रण हेतु बुवाई बुवाई के 3 दिन के अन्दर पेन्डीमेथालिन दवा (30 ई. सी.) 750 मि.ली. से 1 लीटर सक्रिय तत्व (दवा की मात्रा 2.5 – 3 लीटर) प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

माह- दिसम्बर 2014

- ❖ शीतकालीन मौसम पुष्पों में सिंचाई उर्वरक प्रबंधन करें।
- ❖ मिर्च के चूर्ण–रोग की रोकथाम के लिये मिथाइल डेमेटान कीटनाशी (1 मि.ली./ली. पानी) का छिड़काव 10–15 के अन्तराल पर करें।
- ❖ आम में श्यामव्रर्ण रोग आने पर साफ – सुपर (2 ग्राम/ली. पानी) का दो बार छिड़काव 10–12 दिन के अन्तराल पर करें।
- ❖ आलू में मिट्टी चढ़ाएँ एवं उर्वरक प्रबंधन करें। डहेलिया में स्टेकिंग करें।
- ❖ आलू में विषाणुजनित रोगों की रोकथाम हेतु मिथाइल डेमेटान (1 मि. ली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च, अदरक, गाजर, मटर, टमाटर, पालक, रखिया आदि से बने परिरक्षित पदार्थों को सुरक्षित करें।रबी फसल व सब्जी की फसलों में प्रथम सिंचाई प्रक्षेत्र जलाशय (डबरी) में उपलब्ध पानी से करें।
- ❖ नवीन रोपित उद्यान पौधों को अधिका ठंड से बचाने के उपाय करें।
- ❖ छोटे बछड़ों एवं भेड़ – बकरीयों को यथासंभव ठंड से बचायें।

केन्द्र में पदस्थ वैज्ञानिक

श्री मनोज कुमार साहू,कार्यक्रम समन्वयक, 9406285152

श्री राजू राम कोर्राम, कृषि प्रसार विशेषज्ञ,9479077554

श्री रंजीत कुमार मोदी, कीट विशेषज्ञ,

श्री दिबेन्दु दास, मृदा विशेषज्ञ,9479264676

श्री मनीष कुमार वर्मा, सस्य विशेषज्ञ,9406485398

प्रेषक-
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र,नारायणपुर(छ.ग.)
कृषि विज्ञान केन्द्र,केरलापाल कृषि फार्म के पास जिला-नारायणपुर

सेवा में,
श्री/श्रीमती/डॉ...
....
....

इंदिरा किसान-मितान

कृषि विज्ञान केन्द्र, नारायणपुर

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

नारायणपुर(छ.ग.)-494661

Phone: 07781-200060 Email: kvk_narayanpur@rediffmail.com

अंक-4 | अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर 2014 | त्रैमासिक पत्रिका | वर्ष-3

संरक्षक
डॉ. एस.के पाटिल
कुलपति
इं.गां.कृ.वि.वि.,रायपुर

मार्गदर्शक
डॉ. एम.पी.ठाकुर
निर्देशक विस्तार सेवायें
इं.गां.कृ.वि.वि.,रायपुर

प्रेरणस्त्रोत
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना निर्देशक
जोन-७ जे.एन.के.वि.वि.,जबलपुर(म.प्र.)

प्रकाशक
श्री मनोज कुमार साहू
कार्यक्रम समन्वयक

संपादक
श्री दिबेन्दु दास
विषय वस्तु विशेषज्ञ

सह संपादक
श्री राजू रा कोर्राम
श्री रंजीत कुमार मोदी
श्री मनीष कुमार वर्मा

सहयोग
श्री जितेन्द्र कुमार मेश्राम
श्री शिव कुमार सिन्हा
श्री भावसिंग

एस.जी.सी.ए.आर.एस.के रावे छात्र-छात्राओं द्वारा भ्रमण

माननीय कुलपति जी द्वारा भ्रमण

अन्य के.वी.के ओं का कार्यक्रम समन्वयक और विशेषज्ञों द्वारा भ्रमण

फसल व किस्म	औसत अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि./हें.)	प्रमुख विशेषताएं
गेहूँ :–बोने की परिस्थिति अर्धसिंचित, बोने का समय : मध्य अक्टूबर –मध्य नवम्बर			
सी.–306	130–135	15–18	शरबती, मध्यम आकार, सूखा सहनशील, गेरूआ प्रतिरोधी
सुजाता	132–135	18–22	शरबती, दाना बड़ा, चमकदार, गेरूआ रोग प्रतिरोधी
गेहूँ :–बोने की परिस्थिति : पूर्णसिंचित, बोने का समय : 5 नवम्बर – 25 नवम्बर			
लोक–1	100–105	35–40	दाना मोटा व चमकदार मध्यम अवधि
डब्ल्यू.एच.147	120–125	35–40	मध्यम बौनी जाति, दाना मोटा, उँचाई 92 से.मी.
चना			
बी.जी.डी.–72(देशी बोल्ड)	110–120	18–20	उकठा निरोधक
जे.जी.के.–1 (काबुली)	125–130	15–20	उकठा निरोधक
तिवड़ा			
महातिवड़ा	90–100	12–14	भभूतिया रोग निरोधक
प्रतीक	110–115	12–13	डाउनी मिल्ड्यू रोग के प्रति सहनशील
मसूर			
जे.एल.–3	100–110	12–15	उकठा निरोधी
लेन्स–4076	115–120	15–18	गेरूआ उकठा निरोधी
मटर			
अंबिका	110–115	15–16	ऊँचे कद वाली, भभूतिया रोग निरोधक
पारस	100	15	भभूतिया रोग प्रतिरोधक
मूँग			
मालवीय ज्योति	75–80	10–12	पीला मौजेक एवं भभूतिया रोग निरोधक
पैरी मूँग	90–95	10–12	पीला मौजेक एवं भभूतिया रोग निरोधक
सरसों			
पूसा जय किसान (बायो–902)	115–125	19–25	दाने बड़े आकार के, तेलांश 40–42 प्रतिशत
वरदान (आर. के. 1467)	110–105	12–15	बीज भूरा–लाल, मध्यम आकार, तेलांश 40 प्रतिशत
अलसी			
टी. – 397	120–125	8–11	उकठा एवं गेरूआ रोग और सूखा के लिये सहनशी, तेलांश 44 प्रतिशत
आर.– 552	115–120	8–10	उकठा, गेरूआ और भभूतिया रोग के लिये सहनशील, तेलांश 44 प्रतिशत
सूरजमुखी			
मॉडर्न	80–85	8–12	पकने के समय फूल झुक जाते हैं, तेलांश 34–35 प्रतिशत
डी. आर. एस. एफ. – 108	95–100	9–18	तेलांश 36 – 39 प्रतिशत
कुसम			
ए – 1	125–130	12–15	कांटे वाली, उकठा मध्यम सहनशील, तेलांश 30 प्रतिशत
जे. एस. एफ. –1	140–145	15–16	काँटे वाली, फूल व दाने सफेद, तेलांश 31 प्रतिशत
आलू			
कुफरी अशोका	60–75	200–250	अतिशघ्र से मध्यम अवधि में पकने वाली उन्नत किस्म,
कुफरी जवाहर	80–95	220–250	शीघ्र से मध्यम अवधि में तैयार होने वाली किस्म है।

सम्पर्क सूत्र- 07781-200060 किसान कॉल सेंटर(1551) पर निःशुल्क फोन पर कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त करें

जैविक खेती

पिछले बीस वर्षों के कृषि को देखें तो हमारा उत्पादन दो गुने से अधिक बढ़ा, लेकिन उर्वरकों का उपयोग सात गुना एवं पेस्टीसाइड्स का उपयोग 300 गुना से अधिक बढ़ा । पिछले 35–40 वर्षों में रसायनों के उपयोग से पर्यावरण, वातावरण, भूगर्भ, जल, जलीय जीव–जन्तु, पशु–पक्षी खेती में लाभकारी जीव– जन्तु का सन्तुलन बिगड़ने लगा। खेती में आदानों से भरपूर उपयोग के बाद भी उपज को बनाये रखना एक समस्या हो गई। अतः विश्व का ध्यान प्राकृतिक सन्तुलन को बनाये रखने वाली कृषि पद्धति की ओर गया। इस पद्धति को ऑर्गेनिक फार्मिंग नाम दिया गया। ऑर्गेनिक से बिल्कुल नहीं है। ऑर्गेनिक शब्द का अर्थ रसायन विज्ञान में प्रयुक्त ऑर्गेनिक या कार्बनिक से बिल्कुल नहीं है, बल्कि ऑर्गेनिक का संबंध सूक्ष्म जीव –जन्तु से है। वस्तुतः ऑर्गेनिक फार्मिंग को सही अर्थों में जैविक खेती, जैविक कृषि, प्राकृतिक कृषि जैसे शब्दों से ज्यादा अच्छी समझा जा सकता है।

जैविक खेती का मूल– मंत्र

खेती में रसायनों के प्रभाव को रोकना : हरित क्रान्ति के बाद खेती में विभिन्न रसायनों वाले आदानों का भरपूर प्रयोग, रसायनों युक्त कम्पोस्ट, सीवेज के पानी व अवशिष्ट पदार्थों में भारी तत्व कीटनाशी कृषि रसायनों आदि का उपयोग ज्यादा से ज्यादा होने लगा । इससे उपज में स्थिरता या बहुत कम बढ़ोत्तरी, कीट–व्याधि का बढ़ता प्रकोप, फसलों के उत्पाद में कीटनाशक के अवशेष, प्राकृतिक सन्तुलन (फायदेमन्द परभक्षी, परजीवी, जीव– जन्तु का नष्ट होना), बिगड़ना, मृदा स्वास्थ्य का खराब (असन्तुलन की स्थिति) होना, खेती के आदानों जैसे– उर्वरक, नींदानाशक, कीटनाशक में उत्पधिक खर्च जैसी समस्या सामने आने लगी है। इन बातों को रोकना ही जैविक खेती का मूल – मंत्र व सिद्धान्त है।

जैविक खेती से अर्थ रासायनिक उर्वरक कीट– व्याधि नाशक के बिना खेती करने से है। यदि रासायनिक आदानों का उपयोग नहीं करना है, तब हमें अच्छी पैदावार के लिये कुछ सस्य क्रियाओं पर भी ध्यान देना होगा, जिससे खरपतवार, कीट–व्याधि का प्रकोप कम हो। यदि हम परम्परागत खेती की बात करें तो उपरोक्त सभी बातों की रोकथाम के उपाय उसमें निहित थे लेकिन पोषक तत्वों की अधिक मात्रा के प्रति पुरानी किस्में अधिक उत्पादन के लिये असरकारक नहीं थीं। इस पद्धति में नई किस्मों में पोषक तत्व, कीट–व्याधि खरपतवार का नियंत्रण जैविक कृषि के अन्तर्गत होता है। इसके लिए गोबर के खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, बायो–फर्टिलाइजर, हरी खाद आदि का उपयोग पोषक तत्व प्रबंधन के लिये किया जाता है।

जैविक खेती यानि आत्मनिर्भर खेती :– जैविक खेती की परिकल्पना में मुख्यतः उन बातों का समावेश है, जिसमें फार्मिंग सिस्टम खेती कहा जाता है, जिसमें खेती के सभी आदान जैसे – खाद, पानी, कीटनाशक आदि खेत में ही होता है, जिसे हम प्रबन्धन भी कहते है। बाहरी आदानों पर कम से कम खर्च किया जाता है और खेती के सभी साधनों एवं चक्र के रूप में उपयोग किया जाता है। किसान खेती के लिये बाहरी साधनों का अपेक्षा अपने साधनों पर अधिक से अधिक निर्भर होता है।

क्या है प्रमाणिक जैविक खेती ?

साधारण बोलचाल की भाषा में प्राकृतिक तरीके से बिना रासायनिक पदार्थों के उपयोग से की गई खेती को हम जैविक खेती कहते है। इसमें उत्पाद के अलग से कटाई, गहाइ, पैकिंग व विपणन की बात हमारे दिमाग में नहीं होती।

वैज्ञानिक भाषा में जैविक खेती बुवाई से लेकर कटाई, छँटाई, पैकिंग व टैगिंग सभी बातों का समावेश करके खेती की ऐसी पद्धति है, जिससे प्रमाणीकरण के लिये बताये गये नियमों के अन्तर्गत जैविक संसाधनों का उपयोग किया जाता है। प्रमाणीकरण इंस्पेक्टर द्वारा प्रक्षेत्र में कटाई, गहाई, ग्रेडिंग, पैकिंग व टैगिंग की जाती है। इस पूरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद पैकिंग में सर्टिफाइड ऑर्गेनिक का टैग लगा उत्पाद जैविक कहलाता है।

जैविक खेती के लिये सस्य प्रबंधन

1. **समय पर बुवाई :** अलग–अलग फसलों के लिये तथा अलग–अलग क्षेत्रों के लिये बोने के सही समय की सिफारिश की गई है, जिससे कीट–व्याधि के प्रकोप से बचा जा सके। अतः फसल एवं क्षेत्र के अनुसार समय पर बुवाई करें।
2. **खरपतवार नियंत्रण हेतु गर्मी की जुताई तथा नींदा के अंकुरण के बाद पुनः** जुताई कर बुवाई करना चाहिये। इससे खेत में नींदा का प्रकोप कम होता है।
3. **सही किस्मों का चुनाव :** यदि क्षेत्र विशेष में किसी कीट–व्याधि का प्रकोप ज्यादा होता हो, तो प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।
4. **खरपतवार नियंत्रण हेतु यंत्रों का प्रयोगः** सम्भवतः कतार में बोनी करें तथा नींदा नियंत्रण हेतु कतार में चलने वाले या हस्तचलित कृषि यंत्रों का उपयोग करें।
5. **सही फसल–चक्र :** फसल–चक्र में दलहनी फसलों का चुनाव अवश्य करें, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति तथा संरचना बनी रहे।
6. **स्वच्छ खेतीः** ज्यादातर कीट खेत की मेड़ों पर तथा घास–फूस में पनपते है व अंडे देते है। अलग–अलग कीट व्याधि का परपोषि (पनपने का स्थान) अलग होता है। जिस फसल की खेती कर रहे है, उसके कीट–व्याधि के नियंत्रण की कथर्ण, यांत्रिक तरीके की जानकारी एकत्र करें तथा स्वच्छता रखकर उस पर नियंत्रण करें।
7. **लगातार एक ही फसल न लें :** फसल–चक्र या फसल – प्रणाली का चक्र निर्धारित करते समय ध्यान रखें, लगातार एक फसल – चक्र में समावेश करना हो, तब भी खरीफ, रबी, जायद में बदल–बदल कर फसल लें।
8. **हरी खाद लें :** फसल–चक्र में कोशिश करें कि कम से कम दो वर्ष में एक बार हरी खाद का समावेश हो। हरी खाद लेने से पौधों को नत्रजन, स्फूर, पोटाश तो मिलता है, साथ ही हरी खाद खेत की निचली परत में उपस्थित पोषक तत्वों को ग्रहण कर, मिट्टी में मिलने के बाद दूसरी फसलों को पोषक तत्व उपलब्ध कराता है।
9. **फायदेमन्द जीव–जन्तु को पनपने का मौका दें:** खेतों में बहुत से फायदेमन्द कीड़े – मकोड़े, सांप, पक्षी, परभक्षी, परजीवी पाये जाते है। अतः फायदेमंद जीव–जन्तु को खेतों में बढ़ने का मौका दें, जिससे प्राकृतिक रूप से कीटों पर नियंत्रण पाया जा सके।
10. **पशुओं के चारे की व्यवस्था अपने खेत में ही करें:** फसल–चक्र बनाते समय ध्यान रखें कि सभी पालतू पशुओं के लिये चारे–भूसी, चोकर आदि की व्यवस्था खेत में लगने वाले फसलों से ही हो और उनके गोबर, मलमूत्र व अवशिष्ट पदार्थों से कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाई जावे, जिसमें रसायन न हो।

क्र.	खाद	नत्रजन (प्रतिशत)	स्फूर (प्रतिशत)	पोटाश (प्रतिशत)
1	गोबर खाद	0.50	0.20	0.50
2	वर्मी कम्पोस्ट (गोबर से)	0.80	0.50	0.60
3	वर्मी कम्पोस्ट (गोबर एवं दलहनी फसल के पत्तों से)	1.20	0.80	1.20
4	नाडेप कम्पोस्ट	1.00	0.60	1.50
5	नीम की खली	5.00	1.00	1.50
6	हरी खाद	2.50	0.50	1.50

विगत तीन महिनों की गतिविधियां

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्रमांक	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	07	07	375
2.	उद्यानिकी	07	07	286
3.	पौध संरक्षण	03	03	114
4.	मृदा प्रबंधन	03	03	160

विस्तार गतिविधियां

क्रमांक	विषय	संख्या	लाभांवित
1.	कृषक संगोष्ठी	20	935
2.	वैज्ञानिकों का कृषक खेत पर भ्रमण	21	242
3.	प्रदर्शनी	00	00
4.	प्रक्षेत्र दिवस	01	45

कृषकों के खेतों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन(खरीफ)

क्रमांक	फसल	किस्म	रकबा (हे.)	लाभांवित
1.	धान	चंद्रहासिनी	5.00	15
2.	धान	कर्मा मासुरी	5.00	13
3.	धान	समलेश्वरी	5.00	15
4.	धान	महामाया/बमलेश्वरी	5.00	15
5.	धान	पीएसी 801	3.00	10
6.	मक्का	हाईब्रीड	8.00	23
7.	रागी	जीपीयू 28	3.00	09
8.	कोदो	जेके 41	3.00	08
9.	रामतिल	जेएनसी 9	5.00	12
10.	उड़द	टीएयू 1	5.00	14
11.	अदरक	सुरूची/सुरभी	0.400	5
12.	लाख	कुसुमी	10 पेड़	12
13.	मसरूम	आयस्टर	10 इकाई	12

कृषकों, कृषक महिला एवं ग्रामीण युवकों का प्रशिक्षण

बीज, खाद एवं दवाईयों का वितरण

वैज्ञानिकों द्वारा कृषक खेत पर भ्रमण

अगामी तीन महिनों की गतिविधियां

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	मृदा विज्ञान	08	08	240
2	फसल उत्पादन	12	12	360
3	उद्यानिकी	08	08	240
4	पौध संरक्षण	12	12	360
5	कृषि प्रसार	15	15	150

स्वरोजगार हेतु प्रदर्शन

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	मशरूम उत्पादन तकनीकी	04	04	80
2	केंचुआ खाद उत्पादन तकनीकी	04	04	120
3	साबुन उत्पादन तकनीकी	05	05	150

आगामी प्रशिक्षणों का विषय

- रबी फसल में जैविक खाद का प्रयोग।
- आलू उत्पादन के उपर कृषक पाठ शाला।
- कुल्थी के कृषि कार्यशाला।
- रबी फसल में केंचुआ खाद का प्रयोग।
- मटर उत्पादन के उपर कृषक पाठशाला।
- रबी फसल में रासयनिक एवं यांत्रिक विधि द्वारा खरपतवार प्रबंधन का आंकलन।
- ट्राईकोडरमा बिड़ी से बीज उपचार।
- दलहन फसल में राइजोबियम कल्चर।
- जिमीकंद के उन्नत किस्म का आंकलन।
- शकरकंद किस्म के उन्नत किस्म का आंकलन।
- कुसमी लाख का रासायनिक विधि द्वारा कीट नियंत्रण का आंकलन।
- मशरूम उत्पादन विधि।

कृषकों के खेतों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन(रबी)

क्रमांक	फसल	किस्म	रकबा (हे.)	लाभांवित
1.	गेहूँ	कंचन	5.00	05
2.	मक्का	हाईब्रीड	5.00	15
3.	बैंगन	बी.एन.आर. 212	1.00	04
4.	चना	जेकी	5.00	13
5.	मटर	पारस	5.00	17
6.	टमाटर	लक्ष्मी 5005	1.00	16
7.	प्याज	एन. 53	1.00	23
8.	उड़द	इंदिरा उड़द 1	3.00	09
9.	रामतील	जीए–10	3.00	15
10.	बीन्स	फाल्गुनी	3.00	12
	अलसी	एम. एस. पी.	5.00	12